स्वाभिमान स्वावलम्बन श्रद्धाजागरण

वनवासी कल्याण आश्रम हरियाणा

(सम्बद्ध : अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम)

परिचय एवं निवेदन

नगर, ग्राम और वन के वासी – हम सब भारतवासी।।

हम अपने कार्य के माध्यम से कैसा वनवासी समाज खड़ा करना चाहते हैं? जिसका स्वाभिमान जागृत हो, जिसमें अपना विकास करने की आकांक्षा हो, जिसमें अपना विकास करने की क्षमता प्राप्त हुई हो, ऐसा वनवासी हम चाहते हैं।

बाला साहब देशपाण्डे

प्रान्त कार्यालय :

वनवासी कल्याण आश्रम हरियाणा

बजरंगबली कॉलोनी, सब्जी मण्डी के सामने,
रोहतक मार्ग, भिवानी (हरियाणा)
मो. : 7056703501, 9034445578

ई–मेल : haryanavka@gmail.com वेबसाईट : https://www.vkahr.in

ptc printers 7015406342

गौरवपूर्ण इतिहास

जनजाति समाज का इतिहास प्रारंभिक काल से ही गौरवपूर्ण रहा है। हमारे देश में एक षड़यंत्र के तहत विदेशियों ने भारतीय इतिहास को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया है। जिसके अनेक दुष्परिणाम समाज के सामने व्याप्त हैं। जनजातीय समाज को हिन्दू नहीं हैं व आदिवासी कहकर शेष समाज से अलग कर सनातन संस्कृति में फूट डालने का प्रयास किया है। इस प्रकार 'वसुधैव कुटुंबकम' के सूत्रों की सर्वथा उपेक्षा की गयी है, यह भारतीय संस्कृति का घोर अपमान है।

वनवासी कल्याण आश्रम ने जनजाति समाज के उत्थान और विकास के लिए जीवन समर्पित कर दिया। समाज के धर्म, संस्कृति परम्परा और विकास में अपना संपूर्ण योगदान दिया। ऐसे महापुरूषों की प्रेरक जीवनी छपवाकर देशवासियों को जानने का अवसर दिया। कल्याण आश्रम हर वर्ष 15 नवम्बर को बिरसा मुंडा की जयन्ती को 'जनजाति गौरव दिवस' के रुप में मनाता है। इस वर्ष 151वीं जयन्ती मनाई जा रही है। 'जनजाति गौरव दिवस' से जनजातीय समाज में गौरव की अनुभूति हो रही है।

पूंजाभील तल्कलचन्दू जादोनांग और जतरा
देश की खातिर दे गये लहू का एक-एक कतरा

बिरसा मुण्डा, तिलकामांझी, पूंजाभील जैसे कुछ वनवासी वीरों को छोड़कर अधिकांश जनजातीय वीरों को भुला दिया गया और स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका गुमनामी में चली गयी। इन क्रांतिकारियों ने गोला-बारूद का सामना अपने तीर-धनुष से किया। चुआर आंदोलन से शुरु इस क्रम को रानी दुर्गावती, वीरांगना कालीबाई, वीरांगना फूलो और झानो, सिनगी दई और कैली दई, नागारानी गाईदिन्ल्यू, रानी रोपइलियानी, नूरा और सेला, गौरादेवी, राजमोहनी देवी जैसी जनजातीय महिला वीरांगनाओं ने आगे बढ़ाया।

अखिल भारतीय सेवा कार्य :

कल्याण आश्रम एक संस्था है, एक संगठन है तथा विचारों का एक आन्दोलन है। वर्तमान में छतीसगढ़ राज्य के जशपुर नगर में 26 दिसम्बर 1952 में बालासाहब देशपाण्डे जी ने इसका शुभारंभ किया था। वर्तमान में कार्य उसी बीज रूप का एक विशाल वटवृक्ष है। इसमें पूर्वांचल के सुदूर वनवासी क्षेत्रों से लेकर गुजरात तक दक्षिण में केरल से लेकर उत्तर में जम्मू-कश्मीर तक कल्याण आश्रम का कार्य है। पूरे देश में रहने वाले 12 करोड़ वनवासी समाज जिसकी अलग-अलग 700 से अधिक जनजातियां हैं उनके बीच कल्याण आश्रम का 60 हजार गाँवों तक सम्पर्क है।

कल्याण आश्रम की गंगोत्री जशपुरनगर

वनवासी बन्धुओं का सर्वांगीण विकास करने हेतु शिक्षा, चिकित्सा, ग्राम विकास, आर्थिक-विकास व श्रद्धाजागरण जैसे 23 हजार सेवा प्रकल्पों से 2 करोड़ लोगों को बिना सरकारी सहयोग के लाभान्वित कर रहा है। एक सामाजिक संगठन के नाते नगरवासी वनवासी महिला व पुरुष लगभग 1500 पूर्णकालीन कार्यकर्ता लगे हैं, जिसमें सैंकड़ों लड़के-लड़कियाँ बिना शादी किये अपना पूरा जीवन इस पवित्र कार्य को समर्पित किये हैं।

वनवासी कल्याण आश्रम भारत के वन क्षेत्रों में कार्यरत एक सामाजिक संगठन है अपने वनवासी बन्धुओं की धर्म संस्कृति परम्परा का संवर्धन करते हुए सर्वांगीण विकास करना इसका लक्ष्य है। विविध सेवा प्रकल्प उपक्रम एवं कार्यक्रम इसके माध्यम हैं। कार्यकर्ता आधार हैं। इस पवित्र कार्य को आगे ले जाते समय नि:स्वार्थ भाव से जुड़े समाज पर कल्याण आश्रम को पूर्ण विश्वास है।

तीरंदाजी

उपलब्धियाँ

1. कल्याण आश्रम ने वनवासियों का विश्वास अर्जित किया है इसलिए वह इसे अपना हितैषी समझता है।
2. कल्याण आश्रम नगरीय समाज व वनवासियों के बीच सेतु का काम कर रहा है। इसलिए नगरीय समाज उनकी समस्याओं के निवारण में मदद कर रहा है।
3. अपने काम के प्रभाव से धर्मान्तरण पर रोक लगी है तथा धर्मान्तरित व्यक्ति घर वापसी कर रहे हैं क्योंकि उसे एहसास हो रहा है कि धर्मान्तरण के बाद उसकी धर्म व संस्कृति नष्ट हो रही है।
4. महिलाओं के आर्थिक विकास व सम्मान के लिए कल्याण आश्रम ने स्वयं

सहायता समूह बनाये हैं जो बेहद सफल रहे हैं।

5. सत्संग केन्द्रों पर साप्ताहिक एकत्रीकरण से उनके पारिवारिक स्नेह एवं सद्भाव को बढ़ावा मिला है, इसके फलस्वरूप वनवासी क्षेत्रों में नशे की लत, जातीय विद्वेश एवं अलगाववाद पर रोक लगी है।
6. छात्रावासों व विद्यालयों से निकले छात्र डॉक्टर, इन्जीनियर, कृषि, पुलिस, सेना तथा प्रशासनिक क्षेत्र में उच्च पदों पर अपनी उत्कृष्ट सेवायें दे रहे हैं।
7. वनवासी का स्वाभिमान जगा है, वनवासी नेतृत्व खड़ा हो रहा है। वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रहा है। मित्र व शत्रु की पहचान कर पा रहा है।

हरियाणा में सेवा कार्य

एकलव्य छात्रावास भिवानी 1988 में तथा महाविद्यालयीन छात्रों हेतु 2008 से फरीदाबाद में दोनों छात्रावास पूर्वोत्तर राज्यों के छात्रों हेतु चलाये जा रहे हैं। इन छात्रावासों से शिक्षा व संस्कार ग्रहण करके लगभग 400 छात्र अपने-अपने प्रदेशों में जाकर सेना, शिक्षा क्षेत्र व समाज में अपनी सेवायें दे रहे हैं। भिवानी छात्रावास में वर्तमान में 43 छात्र हैं जो 43 गाँवों से, 13 जिलों से, 20 जनजातियों से तथा 6 प्रदेशों से हैं। पिछले 2 वर्षों से जम्मू कश्मीर के कठुआ, डोडा, उधमपुर जिलों से भी 14 छात्र हैं। प्रतिभा विकास के कार्यक्रमों द्वारा इन छोटे-छोटे बालकों को राष्ट्र के सजग प्रहरी के रूप में तैयार किया जा रहा है। ताकि ये वापिस अपने-अपने प्रदेशों में जाकर वनवासी क्षेत्र में देश को तोड़ने वाली ताकतों को मुँह तोड़ जवाब दे सकें। कल्याण आश्रम सरकार पर आश्रित न रह कर समाज आधारित कार्य कर रहा है।

नगरवासी को वनवासी के साथ जोड़ने के लिए निम्न कार्यक्रम समय-समय पर हरियाणा में किए गये, उनके अनुकूल परिणाम प्राप्त हुये। वनयात्रा, छात्र नगर यात्रा, वनवासी क्षेत्र से सांस्कृतिक टोली बुलाकर भ्रमण कराना, प्रकल्प दर्शन, परिवारों के साथ सहभोज, नगर से परिवारों के बच्चों का जन्मदिन छात्रावास में मनाना, त्योहारों पर बच्चों को परिवारों में भेजना, विद्यालय सम्पर्क, उड़ीसा की बहनों की नगर यात्रा तथा वनवासी क्षेत्र की आवश्यकता पूर्ति हेतु 'कुबेर का लड्डू' जैसे कार्यक्रमों की रचना की जाती रही है।

दोन्यी-पोलो छात्रावास (फरीदाबाद) के छात्र

वनवासी क्षेत्र में वस्त्र वितरण

2017 व 2018 में 250 मोटर साईकिलें देश के विभिन्न जिला केन्द्रों पर अखिल भारतीय योजना से भेजी गई। 215 सामुदायिक भवन बनवाये। हर वर्ष लाखों रूपये मूल्य के वस्त्र व दवाइयाँ केन्द्र के निर्देश पर वनवासी क्षेत्र में भेजी जाती हैं। लगभग 1 करोड़ रुपये हर वर्ष उड़ीसा, झारखण्ड व केरल प्रान्तों को भेजे जा रहे हैं।

एकलव्य छात्रावास भिवानी

सितम्बर 2024 में अखिल भारतीय कार्यकर्त्ता सम्मेलन समालखा में संपन्न हुआ। इस तरह 1986 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से बीज रूप में शुरू किया गया कार्य गैर वनवासी क्षेत्र हरियाणा में आज लगभग सभी जिलों में वृहत रूप में पहुँच चुका है। वनवासी कल्याण आश्रम अपने क्रियाकलापों से भारत के पूर्वोत्तर भाग को भारत के अन्य भागों से सांस्कृतिक व आधात्मिक रूप से जोड़ने में सफल हो रहा है। आज वनवासी बंधु अपने समाज का नेतृत्व करते हुए देश के विकास में अहम भूमिका निभा रहे हैं। कल्याण आश्रम वनवासी क्षेत्र में विकास का दीप जला रहा है उसकी रोशनी में वनवासी बन्धुओं का सर्वांगीण विकास हो रहा है। उस दीप में घी के रूप में हम नगरीय बन्धुओं का सहयोग जारी रहना चाहिए।

एकलव्य छात्रावास भिवानी के छात्र

वर्तमान में 20 जिलों के 30 नगरों में समितियाँ हैं जहाँ मासिक बैठकें तथा केन्द्र के कार्यक्रमों के अलावा वर्ष में तीन कार्यक्रम करते हुए जनजागरण का कार्य कर रहे हैं व समाज में 'तू-मैं एक रक्त' की अनुभूति करा रहें हैं।

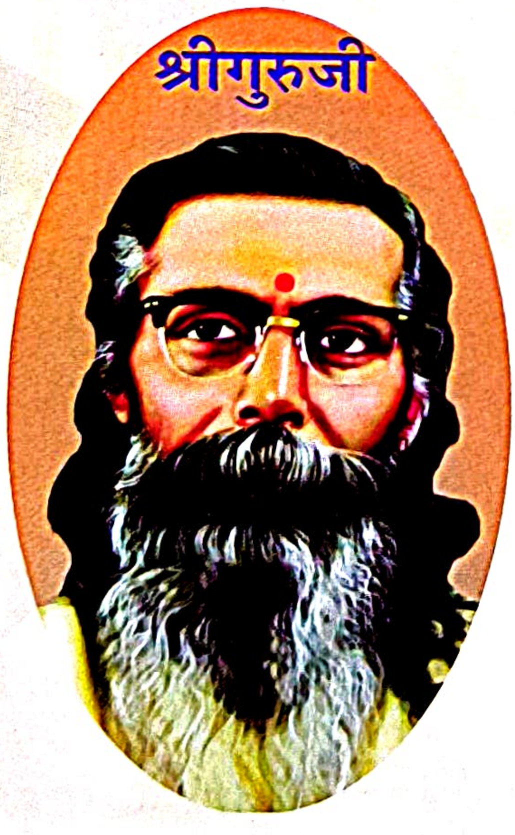

"जिन्हें हम गिरिजन वनवासी कहते हैं निश्चित करें कि अब हम निजी स्वार्थ को मर्यादित रखकर अपने पास की बुद्धि और धन इन सब लोगों को सुशिक्षित, सुसंस्कारित करने के लिए खर्च करेंगे। सम्पूर्ण समाज को सबल बनाने और जगत भर में उसकी शाखा-पल्लव को सुसज्जित और सन्तुष्ट करने के लिए हमें चाहिये कि अपने व्यवहारों में सभी भेदों की भावनाओं को उखाड़ फैंके।"

-श्री गुरु जी

आह्वान

कल्याण आश्रम का कार्य ईश्वरीय अधिष्ठान है। हमें भारत के खोए वैभव, जाज्वल्यमान कीर्ति तथा संस्कृति के उच्चतम शिखरों को पुन: प्राप्त करना है। अत: भारत की एकता, अखंडता एवं अस्मिता हेतु आपका योगदान इस प्रकार हो सकता है:-

1. गृहस्थी की जिम्मेदारियों को पूर्ण कर चुके वानप्रस्थी कार्यकर्ता के रुप में।
2. प्रतिदिन तीन-चार घंटे का समय, प्रति सप्ताह में एक-दो दिन का समय, प्रति माह 5-6 दिन का समय इस पुनीत कार्य हेतु लगा कर।
3. देश की युवा शक्ति अपनी बुद्धि, शक्ति और तेजस्विता से प्रचारक में या पूर्णकालीन के रुप में या अंशकालीन कार्यकर्ता के रुप में सहयोगी बनकर।

दया नही दायित्व, दान नहीं कर्त्तव्य

वनवासी क्षेत्र में बनने वाले सामुदायिक भवन (मंदिर) हेतु	51000/-
फरीदाबाद छात्रावास के छात्र का वार्षिक व्यय (महाविद्यालय)	41000/-
एक एकल विद्यालय (40-50 विद्यार्थी) का वार्षिक व्यय (वनवासी क्षेत्र)	21000/-
भिवानी छात्रावास के एक छात्र का वार्षिक व्यय (छात्रपालक)	15000/-
एक चिकित्सा शिविर का व्यय (वनवासी क्षेत्र)	11000/-
छात्रावास में (50 छात्र) एक दिन का भोजन सहयोग	8000/-
छात्रावास में (50 छात्र) एक समय का भोजन सहयोग	3100/-

सहयोगकर्ता बैंक/NEFT वनवासी कल्याण आश्रम हरियाणा के नाम से दें।
आप द्वारा दी गई सहयोग राशि आयकर धारा 80G के अंतर्गत कर मुक्त हैं।

प्रांत कार्यकारणी

संरक्षक	:	श्री बंसीलाल जी कत्याल (फरीदाबाद) मो. : 9810638117
अध्यक्ष	:	श्री महेन्द्र कुमार जी नरेश (गुरुग्राम) मो. : 9818033900
उपाध्यक्ष	:	श्री रमेश जी गोयल (रोहतक) मो. : 9416255172
	:	श्री अशोक जिन्दल जी (भिवानी) मो. : 9812055004
	:	श्री परमानन्द गोयल जी (चीका) मो. : 9729685778
महासचिव	:	श्री सुरेन्द्र जी शर्मा (फरीदाबाद) मो. : 8130712223
सचिव	:	श्री महाबीर सिंह जी मलिक (जींद) मो. : 9416186941
		श्री रामनिवास जी अग्रवाल C.A. (हिसार) मो. : 9416041215
कोषाध्यक्ष	:	श्री रविन्द्र गुप्ता जी (फरीदाबाद) मो. : 9899318625
सम्पर्क प्रमुख	:	श्री भगवान जी (फरीदाबाद) मो. : 9459888099

क्षेत्रीय नगरीय कार्य प्रमुख : श्री जयभगवान जी शर्मा (भिवानी) मो. : 9215744300

कल्याण आश्रम-अस्मिता संरक्षण : जनजाति समुदाय बाकी सनातन समाज की तरह दुर्गा-अम्बे, शिव-महादेव, गणपति, प्रकृति-पेड़, नदी, सूर्य-चंद्रमा, पहाड़, राम-हनुमान सभी की पूजा करते हैं। उन्हीं का प्रतीक:
ऊपर बायें से : जीरो-अरूणाचल प्रदेश में विश्व का सबसे ऊँचा प्राकृतिक शिवलिंग, त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, त्रिपुरा, माँ भारती, धोलकल गणेश, दंतेवाड़ा-छ.ग; डोनीपोलो (सूर्य-चन्द्रमा) अरूणाचल प्रदेश।
नीचे: गौड रानी दुर्गावती, नरसिंह-चेंचू, माँ त्रिपुरा सुंदरी-त्रिपुरा, कल्याण आश्रम की गंगोत्री जशपुरनगर-छ.ग; भगवान नानी इंताया-अरूणाचल प्रदेश, नरसिंह चेंचू मंदिर-आँध्र प्रदेश और राणा पूंजा भील, मेवाड़, उदयपुर-राजस्थान।

ptc printers 7015406342